केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

# माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

| प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक (अंकों में) | प्रश्न क्रमांक | पृष्ठ क्रमांक | प्राप्तांक (अंकों में) |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | | | 17 | | |
| 2 | | | 18 | | |
| 3 | | | 19 | | |
| 4 | | | 20 | | |
| 5 | | | 21 | | |
| 6 | | | 22 | | |
| 7 | | | 23 | | |
| 8 | | | 24 | | |
| 9 | | | | | |
| 10 | | | | | |
| 11 | | | | | |
| 12 | | | | | |
| 13 | | | | | |
| 14 | | | | | |
| 15 | | | | | |
| 16 | | | | | |

V. No. 325051086

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

| उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा | परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा |
|---|---|
| RAJDA KHAN<br>V.No.325051087 | तृप्ती शर्मा<br>325051169 |

2

प्रश्न क्र.

**प्रश्न क्रमांक - 1**

रिक्त स्थान - उत्तर

(i) 'रामचरित मानस' महाकाव्य की भाषा (अवधी) है।

(ii) सम्पादकीय को (अखबार की) आवाज माना जाता है।

(iii) दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज (पतंग) है।

(iv) भक्तिन पाठ महादेवी वर्मा की (स्मृति की रेखाएँ) है।

(v) स्थायी भाव को जाग्रत करने वाले कारण को (आल[illegible]) कहते हैं।

(vi) लेखक आनंद यादव का पूरा नाम (आनंद रत[illegible] यादव) है।

[क्र० प० उ०]

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 2

सत्य / असत्य -

(i) उत्तर - असत्य

(ii) उत्तर - सत्य ।

(iii) उत्तर - असत्य ।

(iv) उत्तर - सत्य ।

(v) उत्तर - असत्य ।

(vi) उत्तर - सत्य ।

[क्र० प० उ०]

योग पूर्व पृष्ठ ... कुल अंक

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B S F

प्रश्न क्रमांक – 3

सही जोड़ी –

| क्र. | (अ) | क्र. | (ब) |
|---|---|---|---|
| (i) | बिस्कोहर | (ग) | जेठ का पुल |
| (ii) | बिम्ब | (क) | शब्द चित्र। |
| (iii) | चूरन | (घ) | केशव प्रथम वीर। |
| (iv) | अतीत में दबे पाँव | (झ) | धार्मिक अनुष्ठान का स्थान। |
| (v) | फ्रीलांसर पत्रकार | (ख) | अलग - अलग अखबारों में लेखन। |
| (vi) | समाचार लेखन की शैली | (च) | उल्टा पिरामिड। |
| (vii) | कॉलेज ऑफ प्रीस्ट्स | (छ) | यात्रा वृत्तांत |

[ कृ.प.उ. ]

प्रश्न क्र.

# प्रश्न क्रमांक — 4

एक वाक्य —

(i) उत्तर — ① क्या ② कौन ③ क्यों ④ कहाँ ⑤ कब ⑥ कैसे ।

(ii) उत्तर — ① नाटक ② एकांकी ③ कहानी ④ उपन्यास ।

(iii) उत्तर — दूसरे तार सप्तक के

(iv) उत्तर — 1 : 2 : 4 ।

(v) उत्तर — शब्द-शक्ति — शब्द और अर्थ मिल ही काव्य की रचना करते हैं। इस सम्बन्ध को शक्ति द्वारा ज्ञात जिस उसे ही शब्द शक्ति कहते हैं।

(vi) उत्तर — अच्छी बात

(vii) उत्तर — चन्द्रकला ।

[क्र.प.उ.]

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 5

सही विकल्प -

(i) उत्तर - (अ) निशा - निमंत्रण ।

(ii) उत्तर - (ब) कैमरे में बंद अपाहिज ।

(iii) उत्तर - (अ) आठ ।

(iv) उत्तर - (स) भी ।

(v) उत्तर - (द) नीले शंख जैसा ।

(vi) उत्तर - (अ) संस्मरण ।

[क्र. प. 3]

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

## प्रश्न क्रमांक - 6

उत्तर - सेवक धर्म में भक्तिन की तुलना हनुमानजी से की गई है। क्योंकि जिस प्रकार हनुमान जी अपने निः स्वार्थ प्रेम से दिन - रात राम की सेवा में लगे रहते थे। उसी प्रकार भक्तिन भी निःस्वार्थ प्रेम से लेखिका की सेवा में दिन - रात लगी रहती थी।

## प्रश्न क्रमांक - 7

उत्तर -

| क्र. | नाटक | क्र | एकांकी |
|---|---|---|---|
| 1 | नाटक में अनेक अंक होते हैं। | 1 | एकांकी में एक ही अंक होता है। |
| 2 | नाटक में पात्रों की संख्या अधिक होती है। | 2 | एकांकी मे पात्रों की [illegible] कम होती है। |

[क्र. प. उ.]

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

**प्रश्न क्रमांक - 8**

उत्तर - 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर यशोध बाबू के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(1) यशोधर बाबू परम्परावादी व्यक्ति थे।

(2) यशोधर बाबू का जीवन सरल-सादगी शांत, रिश्ते-नातों वाला ~~बीते~~ था।

**प्रश्न क्रमांक - 9** (अथवा)

उत्तर - विरोधाभास अलंकार की परिभाषा - जहाँ किसी पदार्थ, गुण अथवा क्रिया में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण - "मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ।
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ"॥

[क्र.प.3]

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 10

उत्तर -

| क्र | स्थायी भाव | क्र | संचारी भाव |
|---|---|---|---|
| 1 | सहृदय के हृदय मे जो भाव स्थीय रूप से सुप्तावस्था में रहते हैं। स्थायी भाव कहलाते हैं। | 1 | आश्रय के चित्त में जो उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को सन्चारी भाव कहते हैं। |
| 2 | इनकी संख्या 10 है। | 2 | इनकी संख्या 33 है। |

प्रश्न क्रमांक - 11

शुद्ध वाक्य

(i) उत्तर - महादेवी वर्मा विदुषी थीं।

(ii) उत्तर - श्रीकृष्ण के अनेक नाम हैं।

[क्र॰ पृ॰ 3.]

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

B
S
E

**प्रश्न क्रमांक – 12 (अथवा)**

उत्तर – इन्टरनेट पत्रकारिता – इन्टरनेट एक औजार का माध्यम है। यह सूचनाओं के आदान – प्रदान का एक अच्छा माध्यम है।

**प्रश्न क्रमांक – 13 (अथवा)**

उत्तर– शब्द गुण – जो काव्य तत्व रस के नित्य धर्म होते है। उन्हें काव्य गुण या शब्द गुण कहते हैं। यह रस का अनिवार्य तत्व है। जिस तरह ज्वाला में तपन विद्यमान रहती है। ी तरह रस के साथ गुण हमेशा रह है।

इसके निम्नलिखित प्रकार है –

(1) माधुर्य गुण।
(2) ओज गुण।
(3) प्रसाद गुण।

[क्र. प. उ.]

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 14

उत्तर- उमाशंकर जोशी कृत संकलित कविता 'छोटा मेरा खेत' के सन्दर्भ में 'अंधड़' भावनात्मक आवेग की आंधी और 'बीज' विचार और अभिव्यक्ति का प्रतीक है। कवि कहना चाहता है कि कविता के माध्यम से कवि के मन में एक विचार उदित होता है।

प्रश्न क्रमांक - 15

उत्तर- रीतिकालीन कविता की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) रीतिकालीन काव्य में कलापक्ष की प्रधानता रही।

(2) राज्याश्रित होने के कारण कविता भरण-पोषण एवं धन प्राप्ति का साधन बनी।

रचनाकारों के नाम - (1) केशवदास (2) बिहारी - सतसई।

[क्र. प. उ.]

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक – 16

उत्तर – जैनेन्द्र कुमार

(i) दो रचनाएँ – परख, फाँसी

(ii) भाषा-शैली – जैनेन्द्र जी की भाषा-शैली अत्यन्त सरल सहज व भावानुकूल है। जिसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। परन्तु तद्भव एवं उर्दू फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग अत्यन्त सहजता से हुआ है। इनकी रचनाओं में व्यंजना की प्रधानता रही तथा दार्शनिक दुरूहता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। कथाकार होने के साथ-साथ जैनेन्द्र जी की शैली चर्चात्मक है। वे अपनी बात को समझाते हुए आगे बढ़ते है और बहुत नपे-तुले शब्दों में गहन बात की व्याख्या करते हैं।

(iii) साहित्य में स्थान – कथाकार होने के साथ-साथ जैनेन्द्र की पहचान अत्यन्त गम्भीर चिन्तक के रूप में रही। हिन्दी साहित्य जगत में इनका अवदान बहुत व्यापक और वैविध्यपूर्ण हैं।

[ 85.4.3 ]

प्रश्न क्र.

B S E

प्रश्न क्रमांक - 17

भाव विस्तार

उत्तर - 'बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।'

क्रोध यदि आम है तो बैर उसका अचार या मुरब्बा है। जिस प्रकार आम की अपेक्षा उसका अचार या मुरब्बा बनाकर अति अधिक लम्बे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं। उसी प्रकार बैर क्रोध का स्थायी रूप है। वास्तव में जो क्रोध तत्काल प्रदर्शित होने से रह जाता है। वह समय आने पर कुछ अवधि के बाद बैर बनकर प्रदर्शित होता है।

[ क्र. प. उ. ]

प्रश्न क्र.

पृष्ठ 14 के अंक

प्रश्न क्रमांक – 18

उत्तर – संकेत – विश्व का वर्तमान उन्नत ——— अन्याय करते हैं।

(i) शीर्षक – 'मनुष्य का अन्याय'

(ii) विधाता की अनुपम रचना है जो निश्च ही महान उद्देश्यों की सम्पूर्ति के लिए दिया गया है।

(iii) अगर हम दुर्लभ तन को यदि हम आलस्य प्रमाद अथवा घटिया और कामों गवां देते हैं। और दुर्लभ तन का उपयोग नहीं करते हैं। तो विधाता के प्रति हम अन्याय करते हैं।

[क्र. प. उ.]

प्रश्न क्र.

**प्रश्न क्रमांक = 19**

<u>सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'</u>

(i) <u>दो रचनाएँ</u> – अनामिका, परिमल

(ii) <u>भावपक्ष</u> – हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी नि ने अपने स्वप्न के माध्यम से हिन्दी जगत को श्रेष्ठ रचनाएँ प्रदान की है। आपके काव्य में स्थापित मूल्यों के प्रति विद्रोह के स्वर उभरे हैं। आपने छायावाद श्रेष्ठ रचनाएँ प्रदान की है। आप प्रयोगवाद और रहस्यवाद के प्रवर्तक माने जाते है।

<u>कलापक्ष</u> – आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सरल है। तत्सम एवं तद्भव के शब्दों का प्रयोग आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, यमक, सन्देह, भ्रान्तिमान आदि अलंकारों का प्रयोग अपनी रचनाओं के माध्यम से

[कृ. प. उ.]

प्रश्न क्र.

किया है। दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय आदि अनेक छन्दों का प्रयोग आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है

(iii) साहित्य मे स्थान – हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप कवि के रूप में आप सुविख्यात है। हिन्दी साहित्य जगत मे आपकी कविता बहुत निराली है।

प्रश्न क्रमांक – 20 (अथवा)

उत्तर – संकेत – शिरीष के फूलों की _____ तरह खड़खड़ा रहे हैं।

सन्दर्भ – प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के सुप्रसिद्ध निबंध 'शिरीष के फूल' से अवतरित है। इसके लेखक 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' है।

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश में कवि ने शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर सुन्दर वर्णन किया है।

[क्र. प. उ.]

प्रश्न क्र.

व्याख्या - प्रस्तुत गद्यांश कवि मे लेखक ने शिरीष की कोमलता को देखकर उसके बारे मे वर्णन किया है। जिसमें उन्होंने लिखा है। जिस प्रकार बच्चों का स्वभाव अत्यन्त कोमल पवित्र निश्छल होता है। उसी प्रकार वे स्वभाव से अच्छे होते है। उनके मन में किसी प्रकार का कपट नहीं होता है वैसे ही शिरीष के फूल भी बच्चों की तरह अत्यन्त कोमल होते है।

विशेष - (1) शिरीष के फूलों में कोमलता का वर्णन किया गया है।

(2) भाषा सरल सहज व सरस है।

(3) माधुर्य गुण विद्यमान है।

(4) बच्चो के प्रति सुन्दर भावना का वर्णन है।

[क्र.प.उ.]

योग पूर्व पृष्ठ

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 21

उत्तर - ~~सचिव~~.

सेवा में,

सचिव,

माध्यमिक शिक्षा म०डल

भोपाल (म.प्र.)

विषय - अंकसूची की द्वितीय ति प्राप्त रने हेतु।

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है कि मैंने हाई स्कूल बोर्ड की परीक्षा 2023 में उत्तीर्ण की थी। लेकिन अब मेरी अंकसूची कहीं खो गई है। अतः मुझे अन्य विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए इसकी दूसरी प्रति चाहिए। इसके सन्दर्भ में मुझसे संबंधित जानकारी अग्रवत है।

B S E

[क्र.प.उ.]

प्रश्न क्र.

नाम - मारूफ बानो
पिता का नाम - याकूब खान
परीक्षा - 2023
परीक्षा केन्द्र - शा. क. उ. मा. विद्यालय
अनुक्रमांक - 1028243
पूरा पता - रोशनी रोड, नर्सरी के पास वार्ड नं. 14 लहार
संलग्न - ₹ 100 बैंक ड्राफ्ट

दिनांक = 25/02/25

भवदीय।
मारूफ बानो

प्रश्न क्रमांक - 23

उत्तर - संकेत - धूत कहौ ---- न देबको दोऊ।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के पाठ 'कवितावली' (उत्तरकांड) से अवतरित है। इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास।

[क्र.प.उ]

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

B S E

प्रसंग — प्रस्तुत पद्यांश मे कवि ने मनुष्य के व्यवसाय के बारे मे चित्रण किया है।

भावार्थ — प्रस्तुत पंक्ति में कवि तुलसीदास ने संसार में पेट भरने के लिए मनुष्य धर्म - अधर्म दोनों कार्य करते है। अतः पेट की आग को उन्होंने सबसे बड़ी आग माना है क्योंकि पेट की आग की तड़प मे मनुष्य धर्म - अधर्म जैसे कार्य करते है। पेट की आग इतनी शक्तिशाली है कि वह मनुष्य को किसी भी हद तक ले जा सकती है।

विशेष — (1) मनुष्य के धर्म - अधर्म कार्यों का वर्णन किया है।
(2) भाषा सरल सहज खड़ी बोली है।
(3) तत्सम शब्दावली का प्रयोग हुआ है।
(4) विरोधाभास अलंकार है।

[क्र.प.63]

वर्तमान युग एवं इन्टरनेट | प्रश्न क्रमांक - 22

उत्तर - रूपरेखा - ① प्रस्तावना ।
② इन्टरनेट के लाभ ।
③ इन्टरनेट की हानियाँ ।
④ इन्टरनेट की उपयोगिता ।
⑤ उपसंहार ।

प्रस्तावना - आज पूरे विश्व-भर में इन्टरनेट का उपयोग बड़ी तेजी से हो रहा है। इन्टरनेट अब हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। इन्टरनेट के द्वारा अ हम कहीं भी कभी भी किसी के सम्पर्क में आ सकते हैं। भारत देश मे इन्टरनेट की उपयोगिता बड़ी तेजी से बढ़ रही है।

इन्टरने की उपयोगिता - इन्टरनेट का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। इन्टरनेट के द्वार हम किसी प्रकार की खबर या रेडियो देख व सुन सकते हैं। इन्टरनेट का हमारे जीवन मे विशेष योगदान है। आज हर व्यक्ति इन्टरनेट का उपयोग बहुत से कार्यों मे कर रहा है।

[क्र. पृ. उ.]

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न क्र.

BSE

इन्टरनेट से लाभ – इन्टरनेट एक ऐसा यंत्र है जो इन्टरनेट से हमे बहुत से लाभ हो सकते है।
आज के युग में इन्टरनेट से कुछ भी ऑनलाइन ऑर्डर भी कर सकते है। इनका लाभ भी बहुत है। जैसे - व्हाट्सप, फेसबुक सोशल-नेटवर्किंग आदि मे करते है। ज्यादातर लोग किसी के घर जाने से बेहतर समझते है कि फेसबुक, इमेल आदि में चैट करना ज्यादा पसंद करते है।

इन्टरनेट से हानियाँ – जंहा एक ओर इन्टर से मानव को बहुत लाभ है। वहीं दूसरी ओर इससे कुछ हानियाँ भी हो सकती है। यह सूचनाओं के आदान - प्रदान का बहुत अच्छा साधन है लेकिन इसे अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। और आतंकवादों को लूटने वाला यह बहुत बुरा साधन है।

इन्टरनेट उपसंहार – इन्टरनेट के द्वारा बच्चे अपनी शिक्षा इसी से करते है। जिससे वे आगे जीवन मे हमेशा के लिए प्रयत्नशील रह सके। इन्टरनेट एक महँगा माध्यम है। यह सूचनाओं और व्यापार के आदान-प्रदान का बहुत अच्छा साधा। इसके द्वारा मानव

[क्र.प.उ]

योग पूर्व पृष्ठ

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

व्यक्तित्व जीवन भर प्रयत्न-शील रहता है। मनुष्य ने इण्टरनेट या मोबाइल बनाया है ना कि इण्टरनेट ने मनुष्य को बनाया है।

B
S
E